कलसामृत

संपादन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

Pustak Bharati
Toronto, Canada

Editor : डॉ. सुरेन्द्र कुमार

Book Title : कलसामृत

Published by :
Pustak Bharati (Books India)
180 Torresdale Ave, Toronto Canada M2R 3E4
email : pustak.bharati.canada@gmail.com
Web : www.pustak-bharati-canada.com

Sales & Marketing :
Pustak Bharati (Books-India)
Publishers & Distributors
H.No. 168, Nehiyan,
Varanasi-221202, U. P. India
Phone : +91-7355682455
E-mail : pustak.bharati.india@gmail.com

Price : $ 22.50
₹ 920

Copyright ©2021

ISBN : 978-1-989416-52-5

ISBN 978-1-989416-52-5
9 781989 416525

© All rights reserved. No part of this book may be copied, reproduced or utilised in any manner or by any means, computerised, e-mail, scanning, photocopying or by recording in any information storage and retrieval system, without the permission in writing from the author.

CamScanner

23. मानव के मन और मस्तिष्क पर संगीत चिकित्सा का प्रभाव 198
डॉ. शिवि तिवारी
24. परिवर्तन के परिवेश में भारतीय संगीत शिक्षा का आधुनिक रूप 206
शोभा कुमारी
25. कलाकार के निर्माण में संगीत शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक (वंशानुगत एवं वातावरण का प्रभाव) 213
डॉ. अंजलि नारायन
26. मुगलकालीन लघु चित्रों में रंगो का महत्व 221
डॉ. अर्चना चौहान (डी.लिट्)
27. संगीत एवं योग चिकित्सा पारस्परिक संबंध सूत्र 228
डॉ. बाल कृष्ण
28. Modern Aspects of Media in Music and Stage Performances 235
Shivani Chaurasia
Prof. Sangeeta Pandit,
Rajashree Nath
29. Contribution of Pandit V.G.Jog in Indian Classical Music 245
Anirban Biswas
30.मैथिल चित्रों में धार्मिक आख्यान 255
दीक्षा जायसवाल
31. संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली 265
डॉ. निष्ठा शर्मा
32. उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल का लोक संगीत : एक अध्ययन 268
डॉ. रामशंकर
आदित्य नाथ तिवारी

CamScanner

30. मैथिल चित्रों में धार्मिक आख्यान

दीक्षा जायसवाल

प्राचीन काल से ही विदेह, अथवा तिरहुत नाम से पुकारी जाने वाली मिथिला नगरी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित रहे हैं। जिनके चलते मिथिला को कई नामों से पुकारा जाता रहा है। मिथिला का उल्लेख हम यजुर्वेद, रामायण, महाभारत, जैन एवं बौद्ध–जातक कथाओं आदि प्राचीन भारतीय ग्रंथो में पाते हैं। विदेह एवं मिथिला का प्राचीन सम्बन्ध सर्वप्रथम हमें 'शतपथ ब्राह्मण' में मिलता है, जो कि याज्ञवलक्य द्वारा मिथिला में लिखा गया प्राचीन ग्रन्थ है।[i]

मैथिल चित्रों का सांसारिक रूप काफी बड़ा है, जिसको किसी एक विशेष शैली में बांधना सही नहीं होगा। वैसे तो हमारे समक्ष जो मैथिल चित्रों की पृष्ठभूमि दिखाई देती है, वह देखने मात्र से सरल प्रतीत होती है। इस मैथिल लोक चित्रकला में हम भित्तिचित्रों, भूमिचित्रों एवं कागज पर बने चित्रों की झलक देखते हैं, जिनमें भिन्न वर्गों में विभाजित शैलियाँ एंव तकनीकि गुणों की विशेषता हैं। परन्तु इनका गहराई से अध्यन करें तो हमें इन चित्रों का एक सम्पूर्ण संसार एवं इनमें छिपे गूण–तत्वों का महत्त्व समझ पाते हैं।

1934 ई. में मैथिल के यह भित्तिचित्र पहली बार जन सामान्य के सामने प्रस्तुत हुए एवं अधिक पसंद किये गए। डब्लू जी आर्चर द्वारा सर्वेक्षण के दौरान खीचे गये छायाचित्रों से हमें इसकी जानकारी मिलाती है, कि किस प्रकार ये मैथिल चित्र इन ग्रामीण लोगों के जीवन से सम्बंधित हैं। आर्चर द्वारा खीचें गये चित्रों में एक गोल कमलबन है जो कि कई गोलाकार आकृतियों से घिरा हुआ प्रदर्शित है, जिसके प्रत्येक आकारों में कुछ ज्यमितियक आकृतियों को चित्रित किया गया है। पास की भित्ति में अनेक भुजाओं वाली देवी दुर्गा का चित्र अंकित है। प्रत्येक भुजाओं को शस्त्रों सहित चित्रित किया गया है, जिन्हें चीते पर बैठे दर्शाया गया है, चीते की मुखाकृति मानव रूप में चित्रित की गयी है, देवी के सिर के उपरी हिस्से में मछलियों को स्थान दिया गया है।[ii] मैथिल में प्रारंभिक समय से चित्रण में संलग्न महिला चित्रकारों का भी यह कथन है कि चित्रों को बनाते समय उन्हें उर्जा प्रतीत होती है एवं चित्रों का निर्माण उनके लिए पूजा के स्रोत के सामान है। अतः चित्रों में स्थानित देवी–देवताओं, प्रतीकों एवं मांडलिक रूपाकारों आदि को यह चित्रकार मुख्य अनुष्ठानिक रूप में पूजते भी हैं। प्राचीन काल से ही यहाँ अरिपन (भूमिचित्रण), भित्तिचित्रण एवं

पट्टचित्रों का महत्व रहा है। जिन्हें समृद्ध बनाने में यहाँ की महिलाओं की प्रमुख भूमिका रही है।

मिथिला के चित्रों में लोकसाहित्य व लोक गाथाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहाँ के लोकचित्र अपनी जीवन्तता एवं सजीवता के लिए विश्व प्रसिद्ध रहे हैं। प्राचीन ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण में भी कथा–कहानी आदि का वर्णन मिलता है जिसे लोक समाज का हिस्सा बताया गया है। यह कथन इस प्रकार है "लोक प्रवातियों में हम देखते हैं कि ,जो भी लोक विद्वान अपने चिरंतर –अभ्यास –श्रम –परिश्रम से जिस विषय में जो भी नवीन अन्वेषणा, नवीन आविष्कार करता है, उस के उस अन्वेषण, आविष्कार की लोकसाधारण में स्वतः ही एक "कहानी" बन जाया करती है। जिसका सुसंस्कृत रूप है "कथा" । लोक संस्कृत में जो कथा कहलाई है, छन्दोअभ्यास्ता नाम की वेदभाषा में वही गाथा नाम से प्रसिद्ध है। वैदिकी गाथा, लौकिकी कथा एवं सामान्यजना नुबन्धिनी "कहानी" तीनो अभिन्नार्थक मान लिए जा सकते हैं।"[iii] इसी प्रकार (वीर गाथा, कथा–कहानी) लौकिक गीत आदि सभी हमारी संस्कृति में निरंतर स्थान पाते हुए हमारे सामाजिक जीवन के मूल रुपों में प्रदर्शित होते हैं। जिनका प्रत्यक्ष प्रमाण हम अपने सांस्कृतिक रीतियों में देख पाते हैं ।

मिथिला में यह लोकचित्र इनके आनन्दमयी जीवन, समाज, आंतरिक मनोभाओं से गहरे सम्बन्ध रखते हैं यह भित्तिचित्र मुख्यतः तीन स्थानों पर बनाये जाते हैं जिनमें प्रथम श्रेणी में गोसाईं गृह (कुल देवता का स्थान) होता है। इस स्थान पर "हरिसौना पूजा का चित्र", देवी देवताओं में माँ दुर्गा, काली, सीता–राम, शिव–पार्वती, आदि चित्र बनते है। "इन चित्रों को सिन्दूर की रेखांकन प्रक्रिया द्वारा भी दीवारों पर चित्रित किया जाता है।"[iv]द्वितीय श्रेणी के चित्रों में कोहबर घर (नव दम्पति के प्रथम प्रवेश हेतु) बनाये जाने की प्रथा हैं। जिसमें कमलबन (पुरैन), बॉस का पेड़, नयना–योगिन, दही का भरिया आदि बनाये जाते हैं।[v] एवं तृतीय स्थान वह होता है जो कोहबर कक्ष के बहार का बरामदा या कोनिया कहलाता है। इन पर पशु–पक्षी, फूल–पत्ती, वृक्ष आदि से सम्बंधित चित्रों को उकेरा जाता है इन तीनो ही स्थानों पर विवाह सम्बंधित एवं धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े चित्रों का अंकन अलग–अलग प्रकार से किया जाता है। 'दी डोमेस्टिक आर्ट ऑफ मिथिला' के लेख में मिलड्रेड आर्चर ने इन चित्रों की विषय–वस्तु को दो भागों में बांटा है जिनमें प्रथम स्थान में देवी–देवताओं एंव दूसरे स्थान में उर्वरता व समृद्धि के प्रतीक जैसे– हाथी, मछली, तोता, सूर्य, चन्द्रमा व बांस आदि को स्थान दिया है।

मिथिला माता जानकी की जन्म स्थली होने के कारण भी अधिक प्रचलित रही है, और इसी वजह से मैथिल वासियों में 'रामायण' के लिये अलग ही उत्साह, भक्ति–भाव एवं प्रेम देखने को मिलता है। इन दृश्य रुपाकारों में राम–सीता विवाह, सीता–हरण, भरत–मिलाप एवं रावण वध आदि अति लोकप्रिय हैं। मिथिला में वैवाहिक रीतियों को बड़े ही स्वाभाविक एवं सहज तरीके से मनाया एवं चित्रित किया जाता हैं, जिनमें यह लोक चित्रकार कई देवी–देवताओं के वैवाहिक दृश्यों को अपने विवाह संस्कारों से सम्बन्धित कर विभिन्न रुपों में चित्रांकित करते नज़र आते हैं । मैथिल में रामलीला का प्रचलन मैथिल भाषा में अधिक देखने को मिलता है जिसका श्रेय 19 वीं शताब्दी में कवि चंदा झा द्वारा कृत 'मैथिल रामायण' को भी जाता है। यहॉ प्रस्तुत रामलीला में दोहों एवं चौपाइयों का भरपूर प्रयोग होता है। यह नाटक यहाँ की नाटक मंडलियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

मैथिल लोगो की श्री राम से जुड़ी भक्तिपरक लोक भावना एवं उनका लोक सामाजिक जीवन में स्थान हमें मैथिल भाषा में उल्लिखित इन उत्कृष्ट पंक्तियों में देखने को मिलता है, दी गई पंक्तियां इस प्रकार हैं–

भेल वियाह राम चलु कोबर, सारिहि छेकलि दुआरि,
हमर भैया लय नाम कहु बहिनिक, तखन जायब वर कोहबर हे।[vi]

इन पंक्तियों में श्री राम के विवाह में कोहबर की बात हुई है, इसके अलावा कुछ और रचनायें हमें मिलती हैं जिनमें कोहबर के साथ ही श्री राम की माताओं का जिक आया है–

कोबर लिखल कोसिल्या रानी, आरो सुमित्रा रानी हे।
आमक घौंद लिखल केकई रानी, बड़ रे जतन सँ हे।[vii]

इन रचनाओं को देख कर अनुमान लगाया जा सकता है कि मैथिल में रामायण का क्या महत्व है एवं यह कैसे इनके सामाजिक जीवन से जुड़ी हुई है। मैथिल में इन पौराणिक एवं धार्मिक ग्रंथों के जरियें इनके ग्रामीण व लौकिक जीवन को भी बखूबी दर्शाया गया है।

मिथिला में भूमि पर विभिन्न रेखाओं द्वारा शुभ रुपाकारों को उकेरने का प्रचलन भी है जिनमें कलश, स्वास्तिक, नव ग्रह एवं शुभ प्रतीकों का अंकन विशेष रुप से होता है। यहॉ अन्य विषयों के साथ देवी–देवताओं का चित्रण मुख्य रुप से होता आया है जिनमें भगवती गौरी, देवी काली, देवी दुर्गा, छिन्नमस्तिका, विष्णु, गौरा–शंकर, दशा अवतार आदि को शक्ति रुप

में, तंत्र–विद्या एवं तांत्रिक रुपाकारों के साथ स्थान दिया जाता है। डब्लू. जी. आर्चर द्वारा खींचे गये छायाचित्रों में से एक चित्र जिसमें हम मण्डला आकृतियों में परिपूर्ण कोहबर एवं भगवान विष्णु के अवतारों के साथ ही कुछ मानवाकृतियों को एक रेलगाड़ी में बैठे पाते हैं। इस चित्र में देवी–देवताओं के प्रति आस्था एवं इनके जीवन से जुड़े उद्देश्यों की झलक हमें साफ दिखाई देती है, जों इनके जीवन से गहरे सम्बंध रखते हैं।

मिथिला में भारतीय पौराणिक ग्रंथों के साथ ही शैव एवं वैष्णव संप्रदाय का प्रचलन भी रहा, जिसमें राधा–कृष्ण के प्रेम–प्रसंगों का गीतात्मक स्वरुप हमें देखने को मिलता है। जयदेव द्वारा रचित 'गीतगोविन्द' वैष्णव सम्प्रदाय में अत्यधिक प्रचलित है, जिसमें राधा–कृष्ण के प्रेम प्रसंग एवं विभिन्न चारित्रिक लीलाओं का वर्णन मिलता है। बंगाल में जिस कृष्ण प्रेम की संगीत परंपरा कवि 'जयदेव' ने शुरू की उसी परंपरा में मैथिल कवि विघापति ने हजारों पदों का निर्माण कर उस शैली को अग्रसरित किया। कवि जयदेव बंगाल के सेन राजाओं के अंतिम नरेश लक्ष्मणसेन के आश्रित महाकवि थे। जिनके द्वारा 12 वीं शताब्दी में 'गीतगोविन्द' काव्य की रचना की गयी। विधापति द्वारा रचे गये अनेको लोकगीत, शिवगीत व नचारियाँ हैं जिनका मिथिला के सांस्कतिक क्षेत्र व जन–सामान्य में अधिक प्रचलन रहा है। यह भी दृष्टव्य है कि विधापति की पदावली में राधा कृष्ण अवतारी न होकर लौकिक रूप में चित्रित हुए हैं विधापति ने सामान्य नायक–नायिका की तरह उनका सृंगारिक चित्रण किया है एवं कई स्थलों पर इन चित्रों का स्वरूप भिन्न दिखाई देता है, विघापति शिव और विष्णु को एक ही रूप की दो कलाएं मानते हैं।[viii] इन्होने काव्य, संगीत, तंत्र, धर्मशास्त्र, कर्मकांड आदि पर भी लिखा परन्तु मातृभाषा मैथिली में रचित लोकगीत विधापति के विशेषगीतों में से एक हैं। बंगाल के वैष्णव लोगो ने तो इन गीतों का प्रचार मथुरा–वृन्दावन तक किया। इन गीतों के भाव वैशिष्ट्य एवं माधुर्य से प्रभावित होकर ही औईनवार कुलशिरोमणि महाराजा शिवसिंह ने महाकवि विधापति को 'अभिनव जयदेव' की उपाधि प्रदान की थी।[ix]

एक किवदंती के अनुसार शिव उनकी काव्य कुशलता व भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं उनके यहाँ उनके नौकर उगना बन कर रहते थे। जिसका यथार्थपूर्ण चित्रण मधुबनी स्टेशन की एक भित्ति पर किया गया है।

मिथिला में महाभारत के कुछ विशेष प्रसंगो का चित्रण भी हमें भलि प्रकार देखने को मिलता है। जिसमें ज्यादातर जुआं खेलते कौरव–पांडव,

दौपदी चीरहरण, माहाभारत युद्ध आदि का दृश्य चित्रित हुआ है। 'दौपदी चीरहरण' का चित्र जिसमें नारी दुख एवं अपमान की झलक हमें साफ दिखती है। इस पूरी सभा में हो रहे वाक्य का भावपूर्ण चित्रण हमें मिथिला की चित्रकार 'बच्चो देवी' के चित्र 'दौपदी हरण' में देखने को मिलता है। यह चित्र 1960 से 1970 ई0 के बीच चित्रित हुआ है जो कि मसचीपं डनेमनउ व ितजए ै। के संग्रह में संग्रहित है।

माहाभारत के कुछ महत्वपूर्ण चरित्रों को देवी–वंदना एवं गीतों में भी स्थान प्राप्त है। नेपाल स्थित जनकपुर क्षेत्र के कमला खोंझ नामक स्थान में कहीं–कहीं आज भी देवी–देवताओं से सम्बन्धित गीत मिलते हैं जिनमें देवताओं के साथ ही तात्रिन्क ओझा, धामी आदि को अत्याधिक आदर प्राप्त है।

यहॉं के कुछ गीतों में माहाभारत के पॉंच पाण्डवों में से 'भीम' सम्बन्धित एक गीत नीचे की पंक्तियों में मिलता है।

कुन कोपिला वन देवा पॉंचो भीम देखो वीर,
चलैत पुथवी नहि थीर, आगू–आगू भीम साइन,
पासू –पाछू भेरव वीर,
सिहं चढ़ल माता गरजत आबे,
भीम साइन भीम साइन बोले नागरिक लोक,
भीम साइन न देखल न कारी न गोर,
जबे छपन कोटि देवता देखन आबे,
गावल सेवक माया दूगो कल जोरि,
सदहि रहत माता दहिन मोर।।[x]

इन पंक्तियों में भीम के समान ही भैरव की वंदना की गई है।

पुपुल जयकर अपनी पुस्तक 'दी अर्थियन ड्रम' में देवी पर लिखती हैं कि यह ऊर्जा रुप में देवताओं के मुख से निकलने वाली ज्वाला से प्रकट हुई थीं। तांत्रिक ग्रंथों में वह अमावस्या की रात, महारात्रि के उस भयानक अंधकार के सभी रगों के साथ–साथ बिना रंग के रुप की भी स्त्रोत थीं। वह अपनी आरोही प्रवृत्ति में महा काली, समय की अकथनीय शक्ति काजल रुप में काली थीं, वह अपने विस्तार की प्रवत्ति में सोलह वर्षीय देवी षोडसी के रुप में लाल थीं, भैरवी रुप में वह एक हजार उगते सूर्य की रोशनी थीं, छिन्नमस्तिका के रूप में एक लाख सुर्य की रोशनी थीं, गहरे नीले रूप में

देवी तारा, मातंगी रूप में काली, धूमावती के रूप में धुंए रंग सी गहरी व बगलामुखी रूप में पीले रंग की थीं।[xi]

तंत्र की दश महाविघा अपने यंत्रों एंव प्रतीकों के साथ ज्यामितिय अर्मूत व मानव रूप में चित्रित की जाती हैं जिसमें उनसे सम्बन्धित मंत्रों एवं शस्त्रों को भी स्थान दिया जाता है। यह तंत्ररूपों से परिपूर्ण चित्रकला मिथिला के ब्राह्मण पुजारियों द्वारा की जाती रही है। मिथिला के ब्राह्मण पुजारियों में बटोही झा जो 'महाविघा देवी काली' के उपासक होने के साथ–साथ एक तांत्रिक लोक चित्रकार भी थे। पूजा विधि–विधान के दौरान वह सिंदूर व हल्दी आदि से देवी–देवताओं के रेखाचित्र भूमि पर उकेरकर व उन्हें घूप आदि दिखा कर पूजा आरम्भ करते थे। इनके पश्चात् इनके पुत्र धीरेंद्र झा ने भी इस चित्रण परम्परा को जारी रखा, धीरेंद्र झा स्वयं एक पुजारी हैं, व लगभग पचास वर्षो से इस चित्रकला में कार्यरत हैं। वर्तमान समय में धीरेंद्र झा व उनकी पत्नी विघादेवी दोनो ही चित्रकारी करते हैं|यह तान्त्रिक पुजारी के अभ्यास के रुप में अक्सर अपने कामों में गूढ़ तत्वों को शामिल कर यंत्रों सहित दश महाविघा, विष्णु के दशावतार आादि देवी–देवताओं के चित्रण करते हैं ।

इस चित्रकला में संलग्न कृष्णानन्द झा भी तंत्र विषयों में चित्रकारी करते थे, इनके पिता दिगम्बर झा महापात्रा ब्राह्मण के एक पुजारी थे, जो पूजा–पाठ में तांत्रिक संकेतों को दर्शाते थे। इनहोंनें इन तंत्ररूपों को चित्ररूपों में उकेरना शुरू किया, आगे चलकर यह परम्परा इनके पुत्र कृष्णानन्द झा जी ने अपनाई व वर्तमान समय में इनके पुत्र गोलू झा इस चित्रण में निरंतर कार्य कर रहे हैं।[xii]

यहाँ के स्थानीय देवताओं में देवी मनसा, राजा सल्हेस व गोविन्द–महाराज भी अधिक लोकप्रिय हैं। इनके द्वारा प्रस्तुत कुछ पुरातन लोक गाथाओं में जादू–टोने, अन्धविश्वास, तांत्रिक शक्तियों एवं डायन आदि शक्तियों की उपस्थिति भी मिलती है। इन लोक–गाथाओं में एक गोविन्द–महाराज की भी लोक–गाथा प्रचलित है –इस लोक गाथा को गीतात्मक स्वरूप में प्रस्तुत करने वाले कलाकार अब अधिक नहीं मिलते, परन्तु मधुबनी स्थित दुसाध जाति के राम–स्वरूप जो कि इन लोक–गाथाओं, कथा–कहानियों, एवं लोकगीतों को कथा–वाचित रूप में

CamScanner

प्रस्तुत करने में निपुण थे, एवं उनके पुत्र इन गायन प्रक्रिया में तालियों की थाप आदि से उनका सहयोग करते थे। इन गाथाओं से प्रेरित होकर उनकी पुत्र–वधु शांति देवी ने माँ काली, शिव, लोक देवता सलहेस आदि विषयों पर चित्रण करना भी आरंभ किया। मैथिल लोक–जीवन से जुड़ी ऐसी अनेकों गाथाएं जो कि तंत्र–मंत्र, जादू–टोने, ओझा–धामी व धार्मिकता आदि से जुड़ी हुई हैं जिनका इनके लोक जीवन से जुड़ी है।

इसी प्रकार सर्पों की अधिष्ठात्री देवी मनसा की पूजा अर्चना भी मिथिलांचल के कई हिस्सों में एवं विशेष रूप से भागलपुर जिले में की जाती है।[xiii] प्रत्येक सुहागिन इस दिन व्रत कर सुहाग की रक्षा के लिए चित्रकारों द्वारा बनाये मंजूसा जल में प्रवाह करती हैं जो कि एक मंदिर अकार में होती है जिसमें आठ पाओं होते है। यह कला मुख्यतः माली जातियों द्वारा की जाती है। यह लोक गाथा बिहुला–विषहरी नाम से प्रचलित है जिसे मंजूसा कला नाम से भी संबोधित करते हैं।

यह कलायें इनके नैतिक जीवन के साथ ही धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक रीतियों से भी जुड़ी है, जिसमें यह अपनी लोक कथाओं, नैतिक कहानियों व सामाजिक उत्सवों को बड़े ही स्वाभाविक ढ़ंग से चित्रित करते नज़र आते हैं। यह सभी उत्सव इनके जीवन के मनोरंजक साधन हाने के साथ इनके जीवन के आधार भी हैं।

संदर्भ सूची :

i. शस्त्री, मोतीलाल, मधुसूदन ओझा; (1956), शतपथब्राहमण–हिन्दी–विज्ञानभाष्य–प्रथमकाण्डान्तर्गत द्वितीय–चतुर्थ–षष्ठ–अध्यायात्मक, द्वितीयखण्ड, वैदिक शोध संस्थान जयपुर, राजस्थान, पृ0. 880.

ii. आर्चर, डब्लू जी; (1948–1949), 'मिथिला पेन्टिग', मार्ग, वोल्यूम–3, न॰– 1–4, पृष्ठ–28.

iii. शस्त्री, मोतीलाल, मधुसूदन ओझा; (1956), शतपथ ब्राह्मण,द्वितीयखंड,रातस्थानवैदिकतच्वशोधसंस्थान, जयपुर, राजस्थान, पृष्ठ–23–24

iv. ठाकुर, उपेन्द्र, (1981),'मधुबनी पेन्टिग', अभिनव पब्लिकेशन, पृष्ठ–60.

v. जयकर, पुपुल; (1969)'पेन्टिगः फ्रॉम ऑफ गे अबैन्डन', मार्ग,

CamScanner

वोल्यूम–22, पृष्ठ–38.

vi. झा, डा. रामदेव; (2002) 'मैथिली लोकसाहित्यः स्वरुप और सौन्दर्य', मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर लहेरियासराय, दरभंगा, पृष्ठ–139.

vii. झा, डा. रामदेव; (2002) 'मैथिली लोकसाहित्यः स्वरुप और सौन्दर्य', मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर लहेरियासराय, दरभंगा, पृष्ठ–140.

viii. (vle.du.ac.in)-बेनीपुरी, रामवृक्ष; छठवा संस्करण, विघापति का इतिहास, विघापति पदावली, पृ0 10–11, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 1012.

ix. www.ingca.nic.in/2003/poonammishra

x. लाल, डॉ॰ रेवतीरमण; (2006) '' कतला खोंझ के लोक गीत'' शोध पत्रिका'', प्रधान सं. –डा0 देव नारायण यादव, निदेशक सं. डा0 प्रफुल्ल कुमार सिंह ''मौन'', प्रकाशक– मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा ,खण्ड़–8, भाग–1,, पटना, पृष्ठ–111.

xi. जयकर, पुपुल; (1980) 'दी अर्थियन ड्रम', राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, पृष्ठ–14.

xii. साक्षात्कार– धीरेंद्र झा,कृष्णानन्द झा, गोलू झा

xiii. बच्चन, मनोज कुमार; (2018) 'मजूसा कला', समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठ– 75–79.

1

2

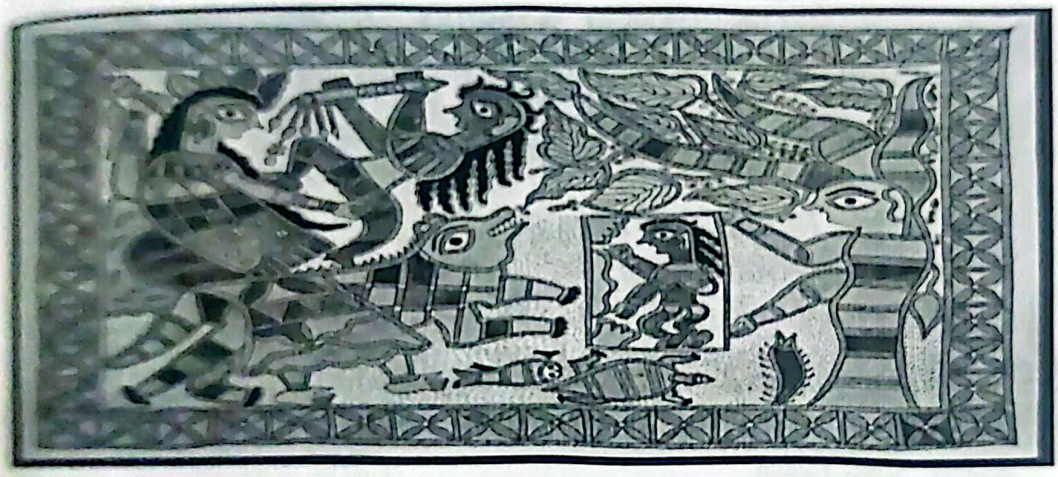

3

4

5

Image Details:

1. Prince Rama, his brother Lakshmana, and the monkey king Sugriva fight the demon Ravana and his army, by Krishna Nand Jha. India; Mithila region, Bihar state, 1975-1982.
   Ink and colors on paper
2. Classic khobar on wall photo by W.G. Archer India; Madhubani District, 1935
3. Wall Painting
4. Govind Maharaj Playing with Mother Ganga
   Place of Origin: India, Bihar state, Mithila region
   Artist: Shanti Devi (Indian, b. 1926)
   Date: 1982
   Materials: Ink and colors on paper
   Dimensions: H. 22 1/2 in x W. 30 in, H. 57.2 cm x W. 76.2 cm
   Credit Line: *Museum purchase*
   Department: South Asian Art
   Collection: Painting
5. 'Ardhnarishvara"
   Place of Origin: India, Bihar state, Mithila region
   Artist: Sita Devi
   Date: 1960-70
   Materials: water color on paper
   Dimensions: H. 22 1/2 in x W. 30 in, H. 57.2 cm x W. 76.2 cm
   Credit Line: Gift of Dr. Jaipaul,2000
   Department: South Asian Art
   Collection: Painting

Assistant Professor
Department of Painting
Vasant Kanya Mahavidyalaya,
Kamachha, Varanasi
E-Mail- diksha@vkm.org.in

CamScanner

कलसामृत

कोई भी कला मानवीय जीवन का संचालक तत्व होता है। हृदय की अनंत गहराई व सच्चे आत्मा से मानवीय भावनाओं को व्यक्त करने के लिए विविध आयामों द्वारा की गई मनमोहक प्रस्तुति ही कला हैं। मानव के उत्कृष्ट चरित्र निर्माण, नियमित व अनुशासित बौद्धिक विकास, सम्यक् विकास तथा सामाजिक उत्थान के साथ आधुनिक परिवर्तन के प्रति जागरूक रहना व प्रेरित करना आदि ही कला का मुख्य उद्देश्य माना गया है। आज के वैज्ञानिक विकासशील युग में यद्यपि वैज्ञानिक उपकरणों से हमारी कलाएं भी प्रभावित हुई हैं जो अपनी प्राचीन स्वरूप बनाए रखने में भले ही सामर्थ्य सिद्ध न हो रही हों लेकिन ये सभी कलाएं अपने परिवर्तन परिप्रेक्ष्य में इस परिवर्तन प्रारूप के साथ अपना अस्तित्व कहीं न कहीं बनाए हुए हैं। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा और अनेकानेक कलाओं पर केन्द्रित इस पुस्तक को साहित्यिक माध्यम से कला जगत में नए आयामों और विकासात्मक परिवर्तनों को समझने और जानने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है। इन मुख्य धरोहरों को सुसज्जित, संरक्षित, सवंर्धित और व्यवस्थित रखने के साथ–साथ आत्म चिंतन, आत्म मंथन और आत्म विश्लेषण करने और उसके अनछुए पहलुओं को भी उजागर करने पर इस पुस्तक में विचार किया गया है जो यह कृति राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न कला साधकों और युवा संगीत, ललित और साहित्य शोधार्थियों के अमृत विचारों एवं शोध आलेखों में नवीनतम चिंतन द्वारा इस किताब को शोभायमान कर रहे हैं जो निश्चित रूप से भारत के विभिन्न कलाओं, कला प्रेमियों, कला सेवियों और कला शिक्षार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगा।

ISBN 978-1-989416-52-5
9 781989 416525

CamScanner